नवसाक्षर साहित्यमाला

काकी

सियारामशरण गुप्त

चित्र
मृणाल दत्ता

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

उस दिन शामू की नींद बड़े सवेरे खुल गयी। उसने देखा कि घर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी काकी जमीन पर सो रही है। उस पर कपड़ा ढंका हुआ था। घर के सब लोग उसे घेरे हैं। सब बुरी तरह रो रहे हैं।

काकी को ले जाते समय शामू ने बड़ा उधम मचाया। वह काकी के ऊपर जा गिरा। बोला—"काकी सो रही हैं। उन्हें कहां लिये जा रहे हो? मैं न जाने दूंगा।"

लोग बड़ी कठिनता से शामू को हटा पाये। काकी के दाह-संस्कार में वह न जा सका। एक दासी ने उसे घर पर ही रखा।

शामू से कहा गया कि काकी उसके मामा के यहां गयी है। पर सच बहुत समय तक छिपा न रह सका।

पड़ोस के बालकों से पता चल ही गया। वह जान गया कि काकी, ऊपर राम के यहां गयी है। कई दिन तक लगातार रोता रहा। फिर उसका रुदन तो शांत हो गया। पर शोक शांत न हो सका। बारिश के बाद जमीन के ऊपर का पानी सूखने में देर नहीं लगती। लेकिन जमीन के नीचे की नमी बहुत दिन तक बनी रहती है। वैसे ही शामू के मन में शोक बस गया था। वह अकेला बैठा रहता। खाली मन से आकाश की ओर ताका करता।
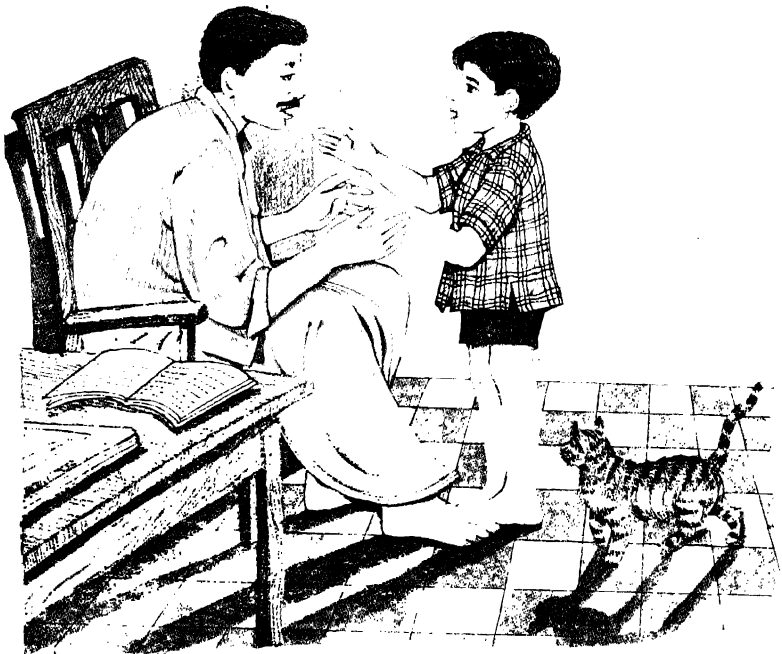
एक दिन शामू ने एक पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर वह एकदम खिल उठा। बिसेसर के पास जाकर बोला—"काका, मुझे पतंग मंगा दो।"

पत्नी की मौत के बाद से बिसेसर उखड़े से रहते थे। "अच्छा, मंगा दूंगा।" कहकर वे उदास भाव से कहीं और चले गये।

शामू पतंग के लिए बहुत बेचैन था। वह अपनी चाह किसी तरह रोक न सका। खूंटी पर बिसेसर का कोट टंगा हुआ था। इधर-उधर देखकर उसने उसके पास स्टूल सरकाया। ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोलीं। जेब से एक चवन्नी निकाली। शामू भागकर भोला के पास गया।

भोला सुखिया दासी का लड़का था। वह शामू की ही उम्र का था। शामू ने उसे चवन्नी देकर कहा—"अपनी जीजी से गुपचुप एक पतंग और डोर मंगा दो। देखो, खूब अकेले में लाना। कोई जान न पाये।"

पतंग आयी। एक अंधेरे घर में उसमें डोर बांधी जाने लगी। शामू ने धीरे से कहा—"भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूं।"

भोला ने सिर हिलाकर कहा—"नहीं, किसी से नहीं कहूंगा।"

शामू ने कहा—"मैं यह पतंग ऊपर राम के यहां भेजूंगा। इसे पकड़ कर काकी नीचे उतरेंगी। मैं लिखना नहीं जानता। नहीं तो इस पर उनका नाम लिख देता।"

भोला शामू से अधिक समझदार था। भोला ने कहा—"बात तो बड़ी अच्छी सोची। पर एक कठिनाई है। इसे पकड़कर काकी उतर नहीं सकती। इसके टूट जाने का डर है। पतंग में मोटी रस्सी हो, तो ठीक रहेगा।"

शामू गंभीर हो गया। बात तो लाख रुपये की सुझायी गयी है। पर परेशानी यह थी कि मोटी रस्सी मंगाये कैसे? पास में दाम हैं नहीं। घर के आदमी तो उसकी काकी को बिना दया-मया के जला आये थे। वे उसे इस काम के लिए कुछ नहीं देंगे। शामू को चिंता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आयी।

शामू ने पहले दिन की तरकीब दूसरे दिन भी अपनायी। उसने बिसेसर के कोट से एक रुपया निकाला। ले जाकर भोला को दिया। बोला—"देख भोला, किसी को मालूम न होने पाये। दो बढ़िया रस्सियां मंगा दे। एक रस्सी छोटी पड़ेगी। जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा लूंगा। नाम

की चिट रहेगी, तो पतंग ठीक वहीं पहुंच जायेगी।''

खुशी-खुशी शामू और भोला अंधेरी कोठरी में बैठे पतंग में रस्सी बांध रहे थे। अचानक शुभ काम में बाधा आ गयी। कुपित बिसेसर वहां आ घुसे। भोला और शामू को धमकाकर बोले—"तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?''

एक ही डांट में भोला मुखबिर हो गया। बोला—"शामू भैया ने रस्सी और पतंग मंगाने के लिए

निकाला था।'' बिसेसर ने शामू को दो तमाचे जड़कर कहा, "चोरी सीखकर जेल जायेगा? अच्छा, तुझे आज ठीक से समझाता हूं।'' अब रस्सियो की ओर देखकर पूछा, "ये किसने मंगायी?''

भोला ने कहा—"शामू भैया ने मंगायी थी। कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहां से नीचे उतारेंगे।

बिसेसर हैरान से वहीं खड़े रह गये। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी। उस पर चिपके हुए कागज पर लिखा हुआ था—"काकी।"